राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
(भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अन्तर्गत एक स्वायत्त संस्थान)
संस्कार रंग टोली (टी.आई.ई.कम्पनी)
प्रस्तुति

संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
सत्यमेव जयते



लघु कथानियाँ

Khel Khel Mein

के. शिवकुमार की
'मरता क्या न करता'
(कक्षा-6)

वेशभूषा : दुर्गा शर्मा

# खेल खेल में

प्रकाश : रमन कुमार

असग़र वजाहत की
'शेर', 'पहचान',
'चार हाथ' और 'साझा'
(कक्षा-11)

मार्गदर्शन सहायक :
हरिकेश मौर्या, दुर्गा शर्मा

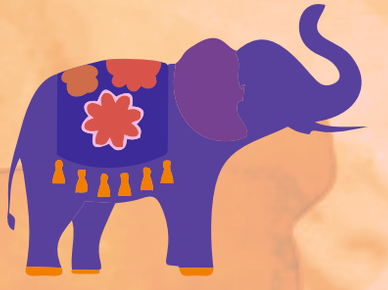
अमरकान्त की
'बहादुर'
(कक्षा-10)

मार्गदर्शन
**देवेन्द्र राज अंकुर**











# खेल खेल में

## के. शिव कुमार की कहानी 'मरता क्या न करता'

कहानी "मरता क्या न करता" एक गरीब लेकिन दयालु पुजारी विष्णु पोट्टि और उनकी पत्नी लक्ष्मी की है। विष्णु पोट्टि हर दिन अपने घर आए मेहमानों को भोजन कराते थे, चाहे घर में अन्न हो या न हो। उनकी यह आदत लक्ष्मी को पसंद नहीं थी, पर वह अपने पति का विरोध नहीं करती थी। एक दिन घर में बिल्कुल अन्न नहीं था और उसी समय कुछ मेहमान आ गए। लक्ष्मी परेशान हुई, पर उसने एक समझदारी भरा उपाय निकाला। उसने मूसल की पूजा शुरू कर दी। जब मेहमानों ने कारण पूछा, तो उसने कहा, "मेरे पति मेहमानों को खिलाने के बाद इसी मूसल से मारते हैं।" यह सुनकर मेहमान डर गए और वहाँ से भाग गए। गाँव में यह बात फैल गई कि विष्णु पोट्टि मेहमानों को मारते हैं। कहानी यह सिखाती है कि कभी–कभी कठिन परिस्थिति में समझदारी और चतुराई से किया गया उपाय भी हमें मुसीबत से बचा सकता है।

## K. Shiv Kumar's 'Marta Kya Na Karta'

**This story is about a poor yet kind-hearted priest, Vishnu Potti, and his wife, Lakshmi. Vishnu Potti would feed every guest who came to their home, whether they had food in the house or not. Lakshmi did not like this habit, but she never opposed her husband. One day, there was absolutely no grain left in the house, and just then, some guests arrived. Lakshmi was troubled, but she came up with a clever idea. She began worshipping the 'musal' (a wooden pestle). When the guests asked about it, she replied, "After my husband feeds the guests, he beats them with this musal." Hearing this, the guests became frightened and ran away. The news spread through the village that Vishnu Potti beats the guests who come to his house. The story teaches us that sometimes, in difficult situations, wisdom and clever thinking can help us escape trouble.**

## असग़र वजाहत की चार कहानियां

असग़र वजाहत सूक्ष्म व्यंग्य और मानवीय सच्चाइयों के कहानीकार हैं, असग़र वजाहत आधुनिक हिन्दी साहित्य के उन सशक्त रचनाकारों में से हैं जिनकी लेखनी सरल होते हुए भी अर्थ की गहराई से भरी रहती है। इनकी भाषा लोक–जीवन की सादगी लिए हुए है, पर उसके भीतर व्यंग्य, प्रतीक और मानवीय करुणा का गूढ़ संसार बसता है। वे समाज के जटिल प्रश्नों को बिना उपदेश दिए, सहज संवादों और लघु प्रतीकों के माध्यम से उजागर करते हैं। उनकी प्रस्तुत चारों लघु कृतियाँ 'शेर', 'पहचान', 'चार हाथ' और 'साझा', अलग–अलग रूपकों में मनुष्य और व्यवस्था के रिश्तों की खोज करती हैं। 'शेर' शक्ति और भय की मानसिकता को परखती है; 'पहचान' अंध–आज्ञाकारिता और पहचान के द्वंद्व को उजागर करती है; 'चार हाथ' सृजन, श्रम और अदृश्य शोषण की कथा है; जबकि 'साझा' विश्वास, महत्वाकांक्षा और मोहभंग के भावों को संवेदनशीलता से स्पर्श करती है। मंच पर इन कहानियों को एक समग्र भावभूमि पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है–जहाँ प्रतीक, दृश्य और संगीत एक–दूसरे में घुलकर कहानियों के मूल विचारों को जीवंत रूप प्रदान कर सकें।

## Asghar Wajahat's Four Stories

**Asghar Wajahat is a storyteller of subtle satire and deep human truths. His language carries the simplicity of everyday folk life, but within it resides a rich world of satire, symbolism, and human compassion. He reveals complex social questions not through preaching, but through natural dialogues and delicate metaphors. All his four short stories 'Sher', 'Pehchan', 'Char Hath', and 'Sajha' — explore the relationship between individuals and the systems they live within, through different symbolic frames. Sher examines the psychology of power and fear; Pehchan reveals the conflict between blind obedience and identity; Char Hath speaks of creation, labor, and invisible exploitation; while Sajha sensitively touches upon trust, ambition, and disillusionment. In this theatrical adaptation, all these stories presented on a shared emotional landscape, where symbols, visuals, and music intermingle to bring the core ideas of the stories.**

## अमरकांत की कहानी 'बहादुर'

कक्षा 10 की हिन्दी पाठ्यपुस्तक गोधूलि से ली गई कहानी 'बहादुर' मध्यमवर्गीय परिवारजनों द्वारा किए जाने वाले अत्यधिक कठोर एवं असभ्य व्यवहार पर आधारित कहानी है जो एक नेपाली बालक बहादुर की जीवन–यात्रा के माध्यम से बाल–श्रम, वर्ग–भेद, ईमानदारी, और नैतिक दुविधा जैसे विषयों को उजागर करती है तथा सामाजिक परिवेश के दबाव में एक मध्यवर्गीय परिवार के सामंती सोच को दर्शाती है। बहादुर मासूम, मेहनती, लगनशील और आज्ञाकारी है, फिर भी अक्सर बिना गलती के डांटा और पीटा जाता है किन्तु जल्द ही वह प्रसन्न भी हो जाता है। एक दिन चोरी के झूठे आरोप से लांछित हो दृढ़ निर्णय कर वह आज़ाद व उमंगों की दुनियां में निकल पड़ता है। यह कहानी दर्शाती है कि नौकरों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार कैसे उनके आत्मसम्मान और संवेदनाओं को तोड़ देता है और इस तरह एक अल्पवयस्क नौकर के मनोविज्ञान को प्रकट करती है।

## Amarkant's 'Bahadur'

**Taken from the class 10 Hindi textbook 'Godhuli', the story 'Bahadur' is based on the harsh and uncivil behaviour often shown by middle-class families. Through the life journey of a Nepali boy named Bahadur, the story brings forth themes such as child labour, class discrimination, honesty, and moral conflict, and also reveals the feudal mind-set that persists under the pressures of a middle-class social environment. Bahadur is innocent, hardworking, sincere, and obedient—yet he is frequently scolded and beaten even when he has done nothing wrong, though he soon returns to his cheerful self. One day, when he is falsely accused of theft, Bahadur makes a firm decision and leaves, stepping into a world filled with hope and freedom. Thus, the story highlights how unjust treatment of domestic workers breaks their dignity and emotional strength, and reveals the inner psychological world of a young child laborer.**

मार्गदर्शन

# देवेन्द्र राज अंकुर



दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर और राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से निर्देशन में विशेषज्ञता प्राप्त हैं। उन्होंने देश भर की अनेक व्यावसायिक और शौकिया नाट्य मंडलियों के साथ नाटकों का निर्देशन किया है। वे 'संभव' समूह के संस्थापक सदस्य और 'कहानी का रंगमंच' आन्दोलन के प्रणेता हैं। उन्होंने भारत के विभिन्न शहरों में बतौर शिक्षक, कैंप डायरेक्टर और नाट्य निर्देशक के रूप में कार्यशालाओं का संचालन किया है। अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं से नाटकों के अनुवाद के साथ–साथ अंकुर जी नियमित रूप से पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में लेखन करते रहे हैं। उनकी सात से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। टैगोर फेलोशिप प्राप्त प्रो. अंकुर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक भी रहे हैं। रंगमंच के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए उन्हें संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

*Guidance*

## *Devendra Raj Ankur*

**A post-graduate in Hindi Literature from Delhi University, and trained in Direction at the National School of Drama, Devendra Raj Ankur has directed plays with numerous professional and amateur theatre troupes across the country. A founder member of the theatre group Sambhav and a pioneer of "Kahani Ka Rangmanch", Prof. Ankur has conducted workshops throughout India as a teacher, camp director, and theatre director. He has translated several plays from English and other languages, and writes regularly on theatre-related subjects for newspapers and magazines. More than seven of his books on theatre criticism have been published. He also received the Tagore Fellowship from the Ministry of Culture. Prof. Ankur is the former Director of the National School of Drama, and has been bestowed with the Sangeet Natak Akademi Award for his outstanding contribution to the field of theatre.**

# मार्गदर्शक का नोट

लगभग 20 बरस के बाद एक बार फिर से टीआईई कंपनी के साथ कहानियों की प्रस्तुति करने के लिए लौटा हूं। पिछली बार हमने एक ही लेखक प्रेमचंद की सात कहानियों को तैयार किया था। प्रस्तुति का शीर्षक था 'प्रेमचंद के सात रंग टोली वालों के संग'। मुझे याद है कि दिल्ली के अलग अलग स्कूलों में उस प्रस्तुति के प्रदर्शन लगातार होते रहे थे। बाद में उस प्रस्तुति की एक कहानी 'बूढ़ी काकी' के चीन में भी प्रदर्शन हुए और उसमें बूढ़ी काकी का अभिनय करने वाली अभिनेत्री अरुणा शेट्टी को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के सम्मान से भी नवाजा गया।

इस बार हमने सोचा कि क्यों न बच्चों के पाठ्य पुस्तकों में लगी कहानियों को अपनी प्रस्तुति के लिए लिया जाय। इस प्रक्रिया में टोली के हर सदस्य ने एक कहानी पढ़कर सुनाई। अंततः चुनाव की प्रक्रिया के तहत तीन कहानियां–के. शिवकुमार की 'मरता क्या न करता', असग़र वजाहत की चार लघु कथाएं ('शेर', 'पहचान', 'चार हाथ' और 'साझा') और अमरकांत की 'बहादुर' निश्चित की गई...ताकि हमारी प्रस्तुति सही रूप में थिएटर–इन–एजुकेशन की अवधारणा को पुष्ट कर सके। प्रस्तुति की पूरी प्रक्रिया मेरे लिए बहुत ही उत्साहवर्धक रही है। हर बार हर कहानी के अभिनेता उसका एक रूप तैयार करके लाते, हम सब एक साथ बैठकर उसे देखते और मैं उन्हें फिर एक बार नया प्रारूप तैयार करके लाने के लिए भेज देता। इस तरह कुल मिलकर तीन–चार बार उन लोगों को इस प्रक्रिया में गुजरने का मौका मिला।

आज जो प्रारूप आपके सामने है वो अभी तक हम जहां तक पहुंचे है उसी का प्रतिफल है। बहुत संभव है अगले प्रदर्शनों में ये बदलता चला जाये। हमारे दर्शक मुख्य रूप से वही बच्चे होने वाले हैं, जिन्होंने इन रचनाओं को अपने अध्ययन के दौरान भी पढ़ा है। तो हम चाहेंगे कि वो भी इस रचना प्रक्रिया में सहभागिता करें।

## *Note of the Guide*

**After almost twenty years, I have once again returned to prepare theatre of stories with the Theatre in Education (TIE) company. At that time, we had prepared seven stories by a single author, Premchand. The presentation was titled "Premchand ke Saat Rang, Toli Walon ke Sang" (Seven Shades of Premchand with the Toli). I remember that the production was performed continuously in various schools across Delhi. Later, one of the stories from that production, 'Boodhi Kaki', was performed in China as well, and the actress Aruna Shetty, who played the role of the old woman, was honored with the Best Actress award for her performance.**

**This time, we thought of selecting stories from children's school textbooks for our presentation. In this process, each member of TIE read and narrated one story. Finally, through a selection process, we decided on three stories: 'Marta Kya Na Karta' by K. Shivkumar; four short stories (Sher, Pehchaan, Chaar Haath, and Saajha) by Asghar Wajahat, and 'Bahadur' by Amarkant. The intention is that our presentation may truly reinforce the concept of Theatre-in-Education.The entire process has been very motivating and energizing for me. Each time, the actors would come with a prepared interpretation of their story. We would all sit together and watch it, and then I would ask them to return with a fresh reworked version. In this way, they underwent the process three to four times, refining their performances again and again.**

**What you see before you today is the outcome of where we have reached so far. It is entirely possible that the performance will continue to evolve in the upcoming shows. Our primary audience will be the very children who have read these stories as part of their studies. So we would like them, too, to participate in this creative process.**

## वेशभूषा व मार्गदर्शन सहायक
# दुर्गा शर्मा



दुर्गा शर्मा ने वर्ष 2005 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (रानावि) से थिएटर तकनीक, परिकल्पना व निर्देशन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से नाट्यशास्त्र में स्नातक किया और पिछले बीस वर्षों से एक नाट्यकर्मी, निर्देशक, अभिनेत्री और शिक्षक के रूप में कार्य कर रही हैं। उन्होंने देश के विभिन्न निर्देशकों जैसे देवेन्द्र राज अंकुर, रॉबिन दास, रजिंदर नाथ, मणि माधव, एम. के. रैना, अनुराधा कपूर, अभिलाष पिल्लई, किरण जैन, जॉन क्लार्क, अनुप्रदा कुमार, अर्चना शुक्ला आदि के साथ काम किया है। उनके निर्देशन में 'गोधूलि', 'अन्धा युग', 'बगुला भगत', 'कुंवरन किचन', 'पानी में मीन', 'गल्ली गुलियां', 'बंदा' जैसे नाटक शामिल हैं। वे कई नाटकों, टीवी धारावाहिकों और वेब सीरीज़ 'होम शांति', 'गली गुलियां', 'बंदा' आदि के लिए वेशभूषा परिकल्पना कर चुकी हैं।

### *Costume Design & Assistance in Guidance*
# *Durga Sharma*

Durga Sharma completed her Post Graduate Diploma in Theatre Technique, Design and Direction from the National School of Drama (NSD) in 2005. She holds a Bachelor's degree in Dramatic Arts from Rajasthan University and has been actively working for the last 20 years as a theatre practitioner, director, actor, and teacher. She has collaborated with renowned directors such as D. R. Ankur, Robin Das, Rajinder Nath, Mohan Maharishi, M. K. Raina, Anuradha Kapur, Abhilash Pillai, John Clark, Kiran Jain, Anuprada Kumar, Archana Shukla and many others. Her costume design work includes theatre productions like 'Godhuli', 'Andha Yug', 'Bagula Bhagat', 'Kuan Khiri Paani Mein', 'Gali Guleiyan', 'Banda', etc., and also extends to films and web series such as 'Home Shanti', 'Gali Guleiyan' and 'Banda'.

## मार्गदर्शन सहायक
# हरिकेश मौर्या



मऊ, उत्तर प्रदेश में जन्मे हरिकेश लगभग एक दशक से आज़मगढ़ की प्रतिष्ठित नाट्य संस्था सूत्रधार से जुड़कर अभिषेक पंडित एवं ममता पंडित के सानिध्य में अभिनय की बारीकियां सीखीं। भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ (2018–20) से द्विवर्षीय विधिवत प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद वह रंगमंच के क्षेत्र में लगभग सभी विधाओं में हस्तक्षेप कर रहे हैं। उन्होंने अब तक 'आषाढ़ का एक दिन', 'अन्धा युग', 'बटोही', 'हंसा जाई अकेला', 'नज़र लगी रामा', 'कसाईबाड़ा', 'समर इन समसिंग', 'बोधू अहीर', 'तुगलक़', 'गरीबनवाज़' आदि नाटकों में अभिनय किया है और 'ये आदमी ये चूहे' और बहुत बड़ा सवाल का निर्देशन किया है। देश के प्रतिष्ठित रंग निर्देशकों बंसी कौल, देवेंद्र राज अंकुर, जॉय मितई, अभिषेक पंडित के साथ बतौर सहायक निर्देशक काम कर चुके हैं। अब तक जिन प्रतिष्ठित रंग गुरुओ के साथ काम किया है उनमें देवेंद्र राज अंकुर, बंसी कौल, सी आर जाम्बे, अमिताभ श्रीवास्तव, सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ, संजय उपाध्याय, जॉय मितई, बापी बोस, सुमन कुमार, ललित सिंह पोखरिया, मनोज मिश्रा, प्रशोभ कलामंडलम, भारतेंदु कश्यप प्रमुख है। वर्तमान में आज़मगढ़ में रहते हुये रंगकर्म के संवर्धन के लिये प्रयत्नशील हैं।

### *Assistance in Guidance*
# *Harikesh Maurya*

Born in Mau, Uttar Pradesh, Harikesh has been associated for nearly a decade with Sutradhar, a renowned theatre group of Azamgarh, where he learned the nuances of acting under the guidance of Abhishek Pandit and Mamta Pandit. After completing a two-year formal training (2018–20) at the Bhartendu Natya Academy, Lucknow, he has been actively working across all forms of theatre practice. He has acted in plays such as 'Ashadh Ka Ek Din', 'Andha Yug', 'Batohi', 'Hansa Jaai Akela', 'Nazar Lagi Rama', 'Kasai Bara', 'Summer in Samsing', 'Bodhu Ahir', 'Tughlaq', and 'Gareebnawaz', among others and directed plays like 'Ye Aadmi Ye Chuhe' and 'Bahut Bada Sawaal'. Harikesh has worked as an assistant director with esteemed theatre directors such as Bansi Kaul, Devendra Raj Ankur, Joy Meetei, and Abhishek Pandit. Some of the distinguished theatre mentors he has trained and worked with include Devendra Raj Ankur, Bansi Kaul, C. R. Jambe, Amitabh Srivastava, Surya Mohan Kulshreshtha, Sanjay Upadhyay, Joy Meetei, Bapi Bose, Suman Kumar, Lalit Singh Pokharia, Manoj Mishra, Prashobh Kalamandalam, and Bhartendu Kashyap. He currently resides in Azamgarh and remains dedicated to nurturing and promoting theatre practice in the region.

प्रकाश परिकल्पना

## रमन कुमार



मधवापुर, मधुबनी, बिहार में जन्मे रमन कुमार भारतेन्दु नाट्य अकादमी, लखनऊ के पूर्व छात्र हैं, जहाँ उन्होंने दो वर्ष का रंग प्रशिक्षण व एक वर्ष की इंटर्नशिप पूरी की। बचपन से ही नृत्य के प्रति गहरा लगाव रहा और इसी जुनून ने उन्हें दिल्ली पहुँचा दिया, जहाँ उन्होंने मैलोंरंग से जुड़कर रंगमंच और कला के क्षेत्र में व्यापक रूप से कार्य किया। अब तक वे 14 से अधिक नाटकों में अभिनय कर चुके हैं, जिनमें 'गुमशुदा नाक' (निर्देः मनोज कुमार मिश्रा) प्रमुख है। उन्होंने 'ज़रूरतें', 'अंधेर नगरी', 'डोमकच', 'जट–जटिन', 'रश्मिरथी', 'अभिषेक नाटक' (संस्कृत संस्थान के लिए), 'साइलेंट स्क्रीम', 'गिफ़्ट ऑफ़ द गॉडेस', 'समुद्र मंथन' (रानावि, दिल्ली), 'तुग़लक' (श्रीराम सेंटर, दिल्ली) और 'दास्तान–ए–झाँसी' का निर्देशन किया है। एक कोरियोग्राफ़र के रूप में उनके विशिष्ट कार्य नाच नट–नटी नाच और अनर्त मिथिला रहे हैं। उन्होंने रानावि, दिल्ली, रानावि, सिक्किम तथा भारत रंग महोत्सव में प्रकाश–परिकल्पना की है। उन्होंने देवेंद्र राज अंकुर, बंसी कौल, सी. आर. जाम्बे, सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ सहित कई प्रतिष्ठित रंग निर्देशकों के साथ कार्य किया है। वर्तमान में रमन मैलोरंग रंगमंडल के प्रमुख हैं और साथ ही अपना प्रोडक्शन हाउस धनार्य प्रोडक्शंस भी संचालित करते हैं। वे स्वतंत्र रूप से प्रशिक्षण, प्रकाश–परिकल्पना और निर्देशन में भी सक्रिय हैं।

*Lights Design*

## *Raman Kumar*

**Born in Madhwapur village in Madhubani, Bihar, Raman Kumar is an alumnus of Bhartendu Natya Academy, Lucknow, where he completed two years training and a one-year internship. Passionate about dance since childhood, his journey brought him to Delhi, where he joined Mailorang and has since working extensively in theatre and arts. He has acted in over 14 plays, including 'Gumshuda Naak' directed by Manoj Kumar Mishra, and has directed several productions like 'Zaruratein', 'Andher Nagri', 'Domkach', 'Jat-Jatin', 'Rashmirathi', 'Abhisheknatakam' (for Sanskrit Sansthan), 'Silent Scream', 'Gift of the Goddess', 'Samudra Manthan' (NSD, Delhi), 'Tughlaq' (SRC, Delhi), and 'Dastaan-e-Jhansi' (at Jhansi and Bithoor Qila, supported by NCZCC). As a choreographer, his works include 'Nach Nat Nati Nach' and 'Anart Mithila'. He has also designed lights for NSD Delhi, NSD Sikkim and Bharat Rang Mahotsav. He has collaborated with renowned directors like Devendra Raj Ankur, Bansi Kaul, C. R. Jambe, Surya Mohan Kulshreshta, and others. Currently, Raman is the Chief of Mailorang Repertory and runs his own production house, Dhanarya Productions, while also working as an independent trainer, light designer, and director.**

पोस्टर–ब्रोशर परिकल्पना

## हिमांशु बी जोशी



हिमांशु बी. जोशी एक बहुआयामी लेखक, परिकल्पक व निर्देशक हैं। उन्होंने 'मेमसाहब पृथ्वी', 'हाँ, मैं गीत बेचता हूँ', 'चाउफा–प्लांग्लू', 'कर्ण', 'शो मस्ट गो ऑन', 'इक्कीसवीं सदी की दादी', 'मंगल ग्रह का रहस्य' और 'चरखा' जैसे नाटक लिखे हैं और सलमान रुश्दी के उपन्यास 'मिडनाइट्स चिल्ड्रन' का नाट्य रूपान्तरण और शमा फ़ुतेहल्ली के 'ताजमहल', लॉरेन हैंसबरी के 'अ रेज़िन इन द सन', तथा डगलस कार्टर बेन के 'एज़ बीज़ इन हनी ड्राउन' का अनुवाद किया है। दारियो फ़ो के नाटक 'अ वुमन अलोन' का आपका अनुवाद रंगप्रसंग में प्रकाशित हुआ है। प्रकाश परिकल्पना के क्षेत्र में हिमांशु एक जाना–माना नाम हैं और कई महत्वपूर्ण नाटकों की प्रकाश परिकल्पना कर चुके हैं। उन्होंने पोस्टर–ब्रोशर और प्रॉस्पेक्टस की परिकल्पना भी की है। भारत भर के अलावा टोक्यो, लंदन, बेलफास्ट, मॉरीशस, दुबई और ताइवान की यात्रा कर चुके हैं। रंगमंच में उन्हें कनिष्ठ व वरिष्ठ शोधवृत्तियाँ तथा प्रकाश परिकल्पना में विशेष योगदान के लिए नटसम्राट सम्मान (1999) व तापस सेन सम्मान (2025) से सम्मानित किया गया है। वर्तमान में आप हिन्दी की प्रतिष्ठित रंगमंच पत्रिका नटरंग के अतिथि सम्पादक हैं।

*Poster-Brochure Design*

## *Himanshu B Joshi*

**A prolific writer, designer, and director, Himanshu B Joshi has written plays such as 'Memsaheb Prithvi', 'Haan, Main Geet Bechta Hoon', 'Chaufa-Planglu', 'Karna', 'The Show Must Go On', 'Ikkisvi Sadi Ki Dadi', 'Mangal Grah Ka Rahasya' and 'Charkha'. He has adapted Salman Rushdie's Midnight's Children for NSD, and translated plays like Shama Futehally's Taj Mahal, Lorraine Hansberry's A Raisin in the Sun, and As Bees in Honey Drown by Douglas Carter Beane (directed by Mariana Weinstein). His translation of Dario Fo's A Woman Alone was published in Rangprasang. Himanshu is a well known name in the lighting design, designed lights for many important plays in last 25 years. He is a recipient of Junior and Senior research fellowships, taught theatre, designed poster-brochure & prospectus and visited widely across the country and cities like Tokyo, London, Belfast, Mauritius, Dubai, and Taiwan for performances. He has been awarded the Natsamrat Samman (1999) and Tapas Sen Samman (2025) for his contribution to lighting design. Presently, he is the Guest Editor of Natarang, a prestigious theatre journal in Hindi.**

# मंच पर

## मरता क्या ना करता

डॉ. एस. भूमिनाथन
मीनाक्षी
स्निग्धा मंडल
शाज़िया बतूल
किंशुक दास

## शेर, पहचान, चार हाथ, साझा

आशीष आत्रेय
पूजा वेदविख्यात
स्निग्धा पॉल
मो. शहंशाह

## बहादुर

राजेश्वरी नंदी
बानी सैकिया
अमरेश कुमार
मो. नौमान

# *On Stage*

## *Marta kya na Karta*

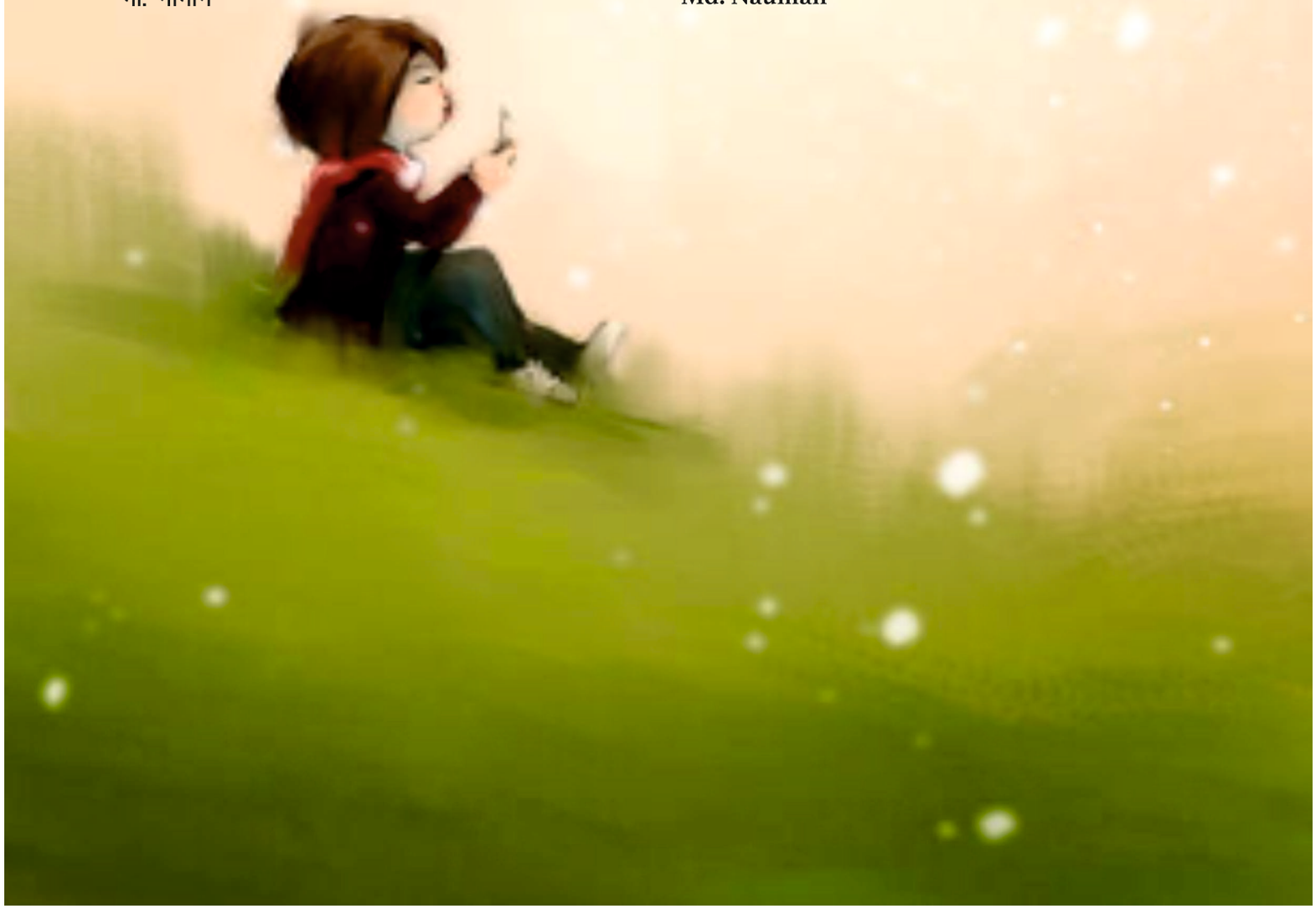
Dr. S. Boominathan
Meenakshi
Snigdha mondal
Shazia Batool
Kingshuk Das

## *Sher, Pahchan, Char Haath, Sajha*

Ashish Atrey
Pooja Vedvikhyat
Snigdha Paul
Md. Shahnshah

## *Bahadur*

Rajeshwari Nandi
Bani Saikia
Amresh Kumar
Md. Nauman



# मंच परे

| | | |
|---|---|---|
| मंच प्रबंधक | : | डॉ. एस. बूमिनाथन |
| वेशभूषा परिकल्पना | : | दुर्गा शर्मा |
| प्रकाश परिकल्पना | : | रमन कुमार |
| पोस्टर–ब्रोशर डिज़ाइन | : | हिमांशु बी जोशी |
| मार्गदर्शन सहायक | : | हरिकेश मौर्या, दुर्गा शर्मा |
| मार्गदर्शन | : | देवेंद्र राज अंकुर |

# Off Stage

| | | |
|---|---|---|
| Stage Manager | : | Dr. S. Boominathan |
| Costume Design | : | Durga Sharma |
| Light Design | : | Raman Kumar |
| Poster-Brochure Design | : | Himanshu B Joshi |
| Margdarshan Sahayak | : | Harikesh Maurya, Durga sharma |
| Margdarshan | : | Devendra Raj Ankur |



# KHEL KHEL MEIN TEAM

## TIE Artists



Dr. S. Boominathan



Bani Saikia



Snigdha Paul



Rajeshwari Nandi



Meenakshi Nautiyal



Md. Shahanshah

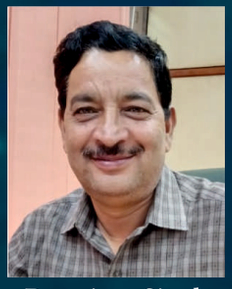
# TIE TEAM



**Riken Ngomle**
Chief, NSD TIE Co.



**Jayanta Rabha**
Coordinator, NSD TIE Co.



**Darmiyan Singh**
Administration, TIE



**Shailendra Kumar**
Administration, TIE



**Joginder Singh**
Lighting Dept. TIE



**Ram Avatar Meena**
Carpentry Dept. TIE



Brijesh Sharma
Carpentry Dept. TIE



Dhirendra Kumar
Lighting Dept. TIE



Nitin Kumar
Sound Dept. TIE



**Reena Kala**
Costume Dept. TIE



**Sunil Kumar**
Attendant



**Md. Rashid**
Attendant

# राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय संस्कार रंग टोली

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की थिएटर–इन–एजुकेशन कम्पनी (संस्कार रंग टोली) की स्थापना 16 अक्टूबर 1989 को हुई थी और यह देश के प्रमुख शैक्षणिक संसाधन केन्द्रों में से एक है। इसका उद्देश्य 8 से 16 वर्ष की आयु के बच्चों को रंगमंच के माध्यम से शिक्षित करना है। संस्कार रंग टोली की प्रमुख गतिविधियाँ निम्नलिखित हैं–

**बच्चों के लिए प्रदर्शन :** टाई कम्पनी में अभिनेता–शिक्षकों का एक समूह होता है जो बच्चों के साथ काम करता है और उनके लिए प्रदर्शन करता है। इस कम्पनी का मुख्य फोकस स्कूलों में रचनात्मक, पाठ्यक्रम आधारित और सहभागितापूर्ण नाटकों का प्रदर्शन करना है, जिन्हें विभिन्न आयु वर्गों के बच्चों के लिए विशेष रूप से तैयार किया जाता है।

**ग्रीष्मकालीन रंगमंच कार्यशाला :** हर वर्ष मई–जून में एक महीने की गहन "ग्रीष्मकालीन थिएटर कार्यशाला" आयोजित की जाती है। इस कार्यशाला का उद्देश्य विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए बच्चों को सामाजिक रूप से एकीकृत करना और उन्हें नाट्य गतिविधियों के ज़रिए स्वयं व अपने परिवेश के प्रति सम्वेदनशील बनाना है।

**शिक्षकों के लिए कार्यशाला :** टाई कम्पनी शिक्षकों के लिए कार्यशालाएँ आयोजित करती है ताकि वे अपने विद्यार्थियों के साथ रंगमंच को 'अर्थपूर्ण' रूप से लागू कर सकें। इसमें शिक्षकों को प्रभावशाली और आनन्ददायक शिक्षण विधियों की तकनीकें सिखाई जाती हैं और बच्चों के समग्र विकास में नाटक की भूमिका पर एक साझा समझ विकसित की जाती है।

**कार्यशाला व महोत्सव यात्रा :** कॉलेजों, अभिभावकों, सामाजिक संगठनों और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए कार्यशालाएँ आयोजित करना भी टाई कम्पनी की प्रमुख गतिविधियों में शामिल है। कम्पनी विभिन्न राज्यों के विभागों, संस्थानों और संगठनों के साथ मिलकर देश और विदेश में अपने नाटकों के महोत्सव आयोजित करती है।

**जश्न–ए–बचपन :** टाई कम्पनी ने 1998 में बच्चों के लिए पहला राष्ट्रीय रंगमंच महोत्सव "जश्न–ए–बचपन" आयोजित किया था, जो अब एक नियमित द्विवार्षिक आयोजन बन चुका है। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से बच्चों द्वारा और बच्चों के लिए प्रस्तुत किए गए नाटकों को आमंत्रित किया जाता है।

**बाल संगम :** नई सहस्त्राब्दी की शुरुआत के साथ, टाई कम्पनी ने "बाल संगम" नामक एक द्विवार्षिक आयोजन शुरू किया था। यह भारत की पारम्परिक और लोक प्रदर्शन कलाओं का उत्सव है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के बच्चे अपनी पारम्परिक कलाओं का प्रदर्शन करते हैं।

**संडे क्लब :** टाई कम्पनी "संडे क्लब" नामक एक विशेष रंगमंच कार्यशाला का आयोजन करती है, जो विशेष रूप से रविवार को होती है। **संडे क्लब भाग–1 :** इसमें बच्चे मौलिक प्रस्तुतियाँ तैयार करते हैं, जो एक प्रक्रिया आधारित अभ्यास के ज़रिए विकसित होती हैं। **संडे क्लब भाग–2 :** यह बच्चों की नाटक को कला के रूप में समझने की दिशा में भाग–1 से आगे का एक कदम है। **संडे क्लब भाग–3 :** इस भाग में बच्चों को नाटक के मूल तत्वों को समझने और उन्हें व्यवहार में लाने का अवसर मिलता है।

**पूर्वोत्तर यात्रा :** टाई कम्पनी हर साल पूर्वोत्तर क्षेत्रों का दौरा करती है और वहाँ बच्चों और शिक्षकों के साथ नाटकों और कार्यशालाओं का आयोजन करती है।




# *National School of Drama Theatre-in-Education Co.*

**The Theatre–in–Education Company (Sanskaar Rang Toli) of the National School of Drama was established on 16, October 1989, and is one of the important educational resource centres of the country. It aims to educate children (8–16 years) through the medium of theatre. TIE Co. carries out following activities :-**

**Performance for Children: The TIE Co. consists of a group of actor– teachers working with and performing for children. The major focus of the company is to perform creative, curriculum based and participatory plays in Schools, designed and prepared specially for children of different age groups.**

**Summer Theatre Workshop: A one month long intensive "Summer Theatre Workshop for Children" is organized in May-June every year. The workshop aims at the social integration of children from various backgrounds to sensitize them towards themselves and their surroundings through theatre activities in a play-way method.**

**Teachers Workshop: TIE Co. offers workshops for teachers to establish and apply theatre "meaningfully" with their pupils. It also offers skills, techniques for effective and enjoyable teaching-learning activities in classroom situation and to build a common understanding about the role of drama in overall development of child.**

**Workshop and Festival Tour : Workshops for colleges, parents, social organizations and children with special needs are also TIE Co.'s important activities. TIE Co. also organizes theatre festivals of its plays by undertaking extensive tours in collaboration with various departments, organizations, institutions and groups of various states of the country and abroad.**

**Jashne-Bachpan : TIE Co. organized its first ever National Theatre Festival for Children, titled "Jashne-Bachpan" from 1998 onwards which is now a regular biennial feature of the TIE Company that invites plays by and for children from different parts of the country.**

**Bal Sangam : With the start of new millennium TIE Co. started a new biennial event "Bal Sangam", a festival of Indian performing folk and traditional arts presented by children practicing these arts from different regions of the country.**

**Sunday Club : TIE Co. organizes Sunday Club—a specialized production oriented theatre workshop held exclusively on Sundays. Sunday Club Part-I : In this part children work to devise original performances through a process of improvisations. Sunday Club Part- II : A Step further towards developing children's understanding of theatre as an art. Sunday Club Part- III : A space for understanding basic theatre elements and bringing them into practice.**

**North East Tour : TIE Co. tours North East regions to organise TIE plays and workshops with children and teachers every year.**



Theatre-in-Education Company
National School of Drama
Bahawalpur House, Bhagwandas Road,
New Delhi-110001
Enquiry : nsdtie@gmail.com
www.nsd.gov.in

design : Himanshu B Joshi #9810549956